।। जय महेश ।।

पश्चिमी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

चतुर्थ राष्ट्र स्तरीय सुलेखा समिति द्वारा आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता

नारी सशक्तिकरण पारिवारिक/सामाजिक हित में - 'पक्ष'

प्रतिभागी - डॉ. श्रीमति सूरज माहेश्वरी

जोधपुर (राजस्थान)

पश्चिमी राजस्थान प्रदेश

सम्पूण सृष्टि में सभ्यता और संस्कृति के प्रारंभ में नारी है, किन्तु कालान्तर में धीरे-धीरे सभी समाजों में सामाजिक व्यवस्था मातृ-सत्तात्मक से पितृ-सत्तात्मक होती गई और नारी समाज के हाशिए में चली गई।

समाज में महिला सम्बन्धी प्रयुक्त अवधारणाओं मे प्रथम अवधारणा है 'नारीत्व'। अर्थात स्त्री-पुरूष की शारीरिक बनावट, आवाज आदि में प्राकृतिक भेद। इसे स्त्री ने स्वीकार करके अपने तौर-तरीके, आचार, व्यवहार, अपने जीवन शैली में ढ़ाल लीया।

द्वितीय अवधारणा है 'नारीयता' सम्बन्धी। जन्म से ही बालिका को क्षमा, भय, लज्जा, सहिष्णुता जैसे गुणों को अंगीकार करने की शिक्षा का निर्धारण पुरूषप्रधान मानसिकता वाले समाज द्वारा किया जाता रहा है।

तृतीय अवधारणा है 'नारीवादी' सम्बधी विचारधारा जो की नारी के 'सशक्तिकरण' की प्रक्रिया को बौद्धिक एवं क्रियात्मक रूप प्रदान करती है।

मानवजीवन के केवल शिकार युग में ही नारी को शिखर स्थान मिला, क्योकि उसका निशाना सधा हुआ था और शरीर में चपलना थी। ऋषी युग आते ही बैलों को खेत में और नारियों को चूल्हे चौके में जोत दिया गया। संभवतः पुरूष ने यह खेल आइने के ईजाद के साथ ही शुरू किया कि हे रूपमुग्धा तुम स्वयं को सदैव निहारती ही रहो। तुम अपनी सुंदरता में ही सिमट कर रह जाओ।

पुरूष बादल की तरह बरसकर गुजर जाता है, और वह पृथ्वी की तरह प्यासी रह जाती है। ''मैं नदिया फिर भी मै प्यासी भेद यह गहरा बात जरासी'' शैलेन्द्र की लिखी यह बात उस सच्चाई के परे कुछ नहीं है।

शास्त्रों से संविधान तक में महिला को पूजनीय स्थान दिया गया है परंतु व्यवहारिक जीवन में उसे दोयम दर्जे का नागरिक ही माना जाता है। संस्कार के नाम पर उसे बांधने के लिए अनेक बेड़िया बनाई गयी है।

दुर्गा के इस देश में आज प्रत्येक नारी के मन में यही सवाल है कि सदियों से शक्ति को पूजने वाले इस देश में क्यों कोख में ही बेटी को मार दिया जाता है, गुड़िया से खेलने वाली गुड़िया क्यों हवस का शिकार हो जाती है, अपशब्दों की गाली उसके नाम की पुकारी जाती है, आँखों में हजारो अरमान संजोयी हुअी बेटियां क्यों दहेज के चौराहे पर नीलाम हो जाती है। महिलाओं ने सदियों से दमन और दोहरे मापदण्ड सहे है।

परन्तु आज के इस दौर में नारीवादी परिप्रेक्ष्य की विचारधारा को अनेक चुनौतियाँ मिल रही है। वह शिक्षित तो हो रही हैं, पर कई बार उस शिक्षा को जीवन में नहीं उतार पाने की वजह से कई महत्वपूर्ण अवसर हाथ से छूट जाते हैं। आज की 'स्त्री' व्याकुल है आगे बढ़ने के लिये, परन्तु सच तो यह है कि पुरूषप्रधान मानसिकता ने स्वंतन्त्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार ही नही किया।

मानव समाज के विकास का यह खुला रहस्य है - स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार तथा पारिवारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्रों में नारी की पुरूषों के बराबर सहभागिता अनिवार्य है। तब ही समाज का संपूर्ण विकास हो सकेगा। नारी का विकास केवल नारी की खुशहाली के दृष्टी से ही आवश्यक नही है बल्कि परिवार के, संपूर्ण समाज के संतुलित विकास की दृष्टि से भी अनिवार्य है।

अब जरूरत है महिलाओं को सशक्त बनाने की और संकीर्ण सोच में बदलाव लाने की।

आज की महिला उजियारा करती सुनहरी धूप की तरह अपनी अभिलाषाओं को मूर्त रूप देना चाहती है, परिन्दो की तरह सफलता के पंख फैलाकर आसमान में उड़ना चाहती है, सतरंगी सपनों में इन्द्रधनुषी रंग भरना चाहती है। नारी भी छू सकती है आकाश बस मौके की है उसे तलाश।

आज की नारी धैर्यवान हे, कल्पनाशील है। महिला जिसे केवल भोग एवं वंशबेल बढ़ाने का जरिया समझा जाता था, आज वायुयान उड़ाने लगी है, जिम्मेदारियों का बोझ परिवार पर पड़ा तो हर क्षेत्र में जमीन से आसमान तक पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़ी हो गयी हैं। स्त्री की क्षमताओं की कोई सीमा नही है। आज वह हिमालय का उच्चतम शिखर छूती अंतराष्ट्रिय प्रतिस्पर्धा में गोल्ड मेडल प्राप्त कर पूरे देश को गर्वित करती है। चुनाव में विजयी होकर अपनी जीत का परचम फहराती है।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने भी कहा था-''मैं किसी समुदाय का विकास महिलाओं द्वारा की गई प्रगति से नापता हूँ। नि:सन्देह घर-गृहस्थी का निर्माण हो या राष्ट्र की रक्षामंत्री की कमान, परिवार समाज और राष्ट्र का निर्माण नारी के योगदान के बिना पूर्ण नही हो सकता। वह माता, बहन, पत्नी, पुत्री एवं मित्र रूपी विविध स्वरूपों में पुरूषों के जीवन के साथ आत्मिक रूप से सम्बन्धित है। कवि गोपालदास नीरज ने जीवन में नारी की महत्ता को इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है।

''अर्धसत्य तुम, अर्ध स्वप्न तुम, अर्ध निराशा आशा
अर्ध अजित-जित,
अंर्ध तृप्ती तुम, अर्ध अतृप्ती-पिपासा
आाधी काया आग तुम्हारी, आधी काया पानी
अर्धागिंनी नारी ! तुम जीवन की आधी परिभाषा

बॉक्सर मैरी कॉम के जीवन से प्रेरित फिल्म का एक संवाद था जिसमे मैरी कॉम का कोच उससे कहता है ''अब दो बच्चों की मां बनने के बाद तुम्हारी शक्ति दोगुनी हो जाएगी और तुम विश्व विजेता खिताब को तीसरी बार भी जीत पाओगी। और अभी कुछ दिन पूर्व भी मैरी कॉम ने पांचवा खिताब जीत कर देश का नाम गौरवान्वित किया।

परन्तु क्या सिर्फ संगोष्ठी, परिचर्चाओ तक ही सीमीत है नारी के अंतर्मन की पीड़ा ?

चांद सितारे पे उसकी नजर है,
और कहां रखने है पांव इसकी भी खबर है।

कल से बेहतर आज व आज से बेहतर आने वाला कल बनाने की सफलता की कुन्जी उसेक हाथ में है। अच्छी पारिवारिक योजना से वो परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रबंधन करने में पुरी तरह सक्षम है। परिवार सशक्त होगा तो पुरा समाज और देश अपने आप सशक्त, मजबूत हो जायेगा। वह काल के कपाल पर प्रहार कर आगे बढ़ना जानती है, मरूस्थली को चमन में संवार सकती है।

इसके लिये बदलाव की शुरूआत घर से ही करनी होगी। हर परिवार में महिला साक्षरता, महिला सशक्तिकरण की अलख जगानी होगी। इसके लिये जरूरी है कि परिवारजनों के साथ हर घर में सीधे संवाद का माहौल बनाया जाये, वह क्या कहना चाहती है उसे सुना और समझा जाये। स्कूली छात्राओं को सेल्फ डिफेंस क्लासेस में जुड़ो-कराते, बॉक्सिंग सिखाई जाए, खुद की सुरक्षा करना सिखाया जाये।

आज वक्त की पुकार है उठो, जागो, आगे बढ़ो। सशक्तीकरण के दीप हम जलाये, आप जलाये, और अंसख्य दीप एक साथ जल उठे, जिससे परिवार व समाज में सकारत्मकता की रोशनी जगमगा उठे। आज का समय यही कहता है प्रशस्त करने दिजाये उसे अपनी राहे, बढ़ने दीजिये उसे सफलता के शिखर की ओर।

धन्यवाद।